

आनंद का रास्ता किस जगह नहीं होता!!!

सभी इस जीवन में रास्ते को ही तलाश रहे, बस इधर उधर की होड़ में रास्ता ठीक मिल नहीं रहा। चाहते हैं आनंद, खोज रहे वस्तु, व्यक्ति या पदार्थों में! क्या मिलेगा, अगर देखा जाये तो ये सभी चीजें विनाशी हैं, इसमें आनन्द नहीं मिलेगा! तो आओ सही रास्ता तलाशें...

एक आदमी रास्ते से जा रहा था। वो पहली बार शहर में आया था। रास्ते में हर जगह पर अलग-अलग विज्ञापनों के बोर्ड लगे हुए थे। उसमें लिखा हुआ पढ़ने की आतुरता में वो अपना मूल रास्ता भूल जाता है।

'आप बीमार हो? तो हमें मिलिए। आपकी बीमारी का इलाज हमारे पास है।' - ये एक लुभावना विज्ञापन।

'आपकी ग्रहदशा' 'यह लकीर टेढ़ी लग रही है। फिकर नहीं करना। हमें ग्रहों को सीधा करना आता है।... मिलिए'

'ठीक, नहीं तो हमारा हरेक पासा उलटा क्यों पड़ता। गाँव छोड़कर शहर में इसीलिए तो आया हूँ कि नसीब के आड़े आने वाली अर्चनें दूर हो जाएं।' - वह मुसाफिर विचार करता है।

'अब आगे नहीं बढ़ना। आगे चोर-लुटेरों की बस्ती है।' किसी की चेतावनी और मुसाफिर घबराकर आगे बढ़ने से रुक जाता है।

'वहां पर बड़ के पेड़ के नीचे बैठे एक व्यक्ति की नज़र उस पर पड़ती है। वह मुसाफिर उससे रास्ता पूछते कहता है: 'मैं भटक गया हूँ...!' वह व्यक्ति कवि भी था और फिलॉसफर भी था। उसने कहा: सुनो, किसी की एक कविता सुनाता हूँ। शायद इससे तुम्हें कोई पैगाम मिल जाए!'

वह थका और हारा हुआ मुसाफिर कविता सुनने को तैयार हो जाता है और वह कवि कविता शुरु करता है:

'ऐ दोस्त...'

'रास्ता किस जगह नहीं होता, सिर्फ हमको पता नहीं होता! वर्षों ऋतु के मिजाज सहता है, पेड़ यूँ ही बड़ा नहीं होता।' 'बहुत अच्छा, अब आगे की पंक्ति सुनाओ' - मुसाफिर कवि से विनति करता है... कवि आगे बढ़ता है -

'छोड़ दें रास्ता ही डर के हम, ये कोई रास्ता नहीं होता।

एक नाटक है ये जमाना यहां, कौन बहुरूपिया नहीं होता!'

खौफ राहों से किसलिए आए दोस्त, हादसा घर में क्या नहीं होता!'

मुसाफिर निश्चिंत और निर्भय बन आगे चलने लगा। उसने विज्ञापन के बोर्ड पढ़ना बंद कर दिया। उसके मन में वो वाक्य गूँजता रहा: 'रास्ता किस जगह नहीं होता, सिर्फ हमको पता नहीं होता।'

बात तो सही ही है, सबको आनंद चाहिए, लेकिन वो आनंद कैसे मिले उसकी समझ नहीं होती।

आज चारों तरफ नकारात्मक विचारों का वायरल चल रहा है। मानव के मन का नियंत्रण नकारात्मक विचारों ने ले लिया है। गम्भीर बीमारी से ग्रस्त आदमी हॉस्पिटल के बिस्तर पर पड़े-पड़े विचार करता है: 'अब मैं नहीं बचूंगा...मेरी बीमारी बहुत गम्भीर है...इस बीमारी से तो भाग्यशाली ही कोई मुक्त हो पाया है।' ऐसे नकारात्मक विचार उसके स्वास्थ्य को हानि पहुंचाते हैं। 'मैं इलेक्शन हार जाऊंगा, शेयर बाज़ार में मेरा नुकसान होगा, अदालत में मेरे पक्ष में निर्णय आने वाला ही नहीं है।', 'मेरा बिज़नेस तो अच्छा चलने वाला ही नहीं है', 'मुझे अच्छे कॉलेज में एडमिशन मिलने वाला ही नहीं है', 'मेरी गरीबी दूर होने वाली ही नहीं है', आदि आदि हर प्रकार के नकारात्मक विचार मानव मन के ऊपर कब्जा जमा लेते हैं। आज घातक व झूठे विचारों के पुर मन में आते रहते हैं और शुभ विचारों का जैसे कि अकाल हो गया है। दुनिया खराब है ही नहीं, व्यक्ति खुद के मलिन विचारों के द्वारा दुनिया के वातावरण को दूषित करता है।

व्यक्ति खुद की शक्ति, सामर्थ्य और क्षमता को पहचानने के बजाय नकारात्मक विचार कर स्वयं की प्रगति के पथ पर स्वयं ही कांटा बिछाता है।

'आनंद की खोज' पुस्तक में एक योग की - शेष पेज 8 पर



- ब्र. कु. गंगाधर

दिल खोलकर देखो, दिल में कौन बैठा है!

सखी रे मैंने पायो तीन रत्न। हम सब आपस में सखे सखियां, गोप-गोपियां अनुभव की लेन-देन करते हैं। बाबा, मुरली, मधुबन तीनों इकट्ठे हैं, यह भान आता है। अभी मधुबन में जो मुरली सुनते हैं वही बाहर भी सुनते हैं। यह साइंस ने बड़ा सुख दिया है। खुशी और आनंद में फर्क है! अतीन्द्रिय सुख है, सत्-चित्-आनंद स्वरूप बन रहे हैं। सच्चाई मन-बुद्धि के द्वारा चित् में चली गई है। स्मृति में और कुछ आता ही नहीं है।

बाबा ने कहा अचानक कुछ भी हो जाए एवररेडी रहना है। बाबा मम्मा ने हम सबकी बहुत सेवा की है। शांता माता ने बॉम्बे में पहले-पहले बाबा को बुलाया, रमेश भाई बाबा-मम्मा को बिठाके गाड़ी चलाया करता था। प्रवृत्ति सम्भालते सभी ने दिल से यज्ञ सेवा की है। अव्यक्त बाबा हमेशा कहता है दिल खोलकर देखो, दिल में कौन बैठा है! दिलवाला, दिल लेने वाला बाबा हमारे अंदर बैठा है। हम बाबा के दिल में, बाबा हमारे दिल में। बाबा दिलखुश मिठाई प्यार से खिलाता था। दिलखुश मिठाई खाना माना ऐसी मधुर वाणी हो जो सबकी दिल खुश हो जाए। जैसे मिठाई मुख में खाई जाती है, ऐसे वाणी मुख से बोलते हैं। हमारी अन्तर-मन की शान्ति है, मन शान्त है तो खुशी बहुत है। पहले कहते थे मन जीते जगतजीत, अभी पता चला है माया जीते जगतजीत। अभी सारे विश्व में रावणराज्य है। अभी बाप रामराज्य की स्थापना कर रहा है। पवित्रता के योगबल से अभी हम बाबा

के मददगार हैं। हम ब्रह्मा मुख वंशावली ब्राह्मण हैं, 100 परसेन्ट प्युरिटी ही हमारी रॉयल्टी है। जितनी पर्सनेलिटी में प्युरिटी है तो रीयल्टी की रॉयल्टी चलन चेहरे पर आती है। हमें चलन और चेहरे से सेवा करनी है।

मैं कौन हूँ, मेरा कौन है, समय कौन सा है! यह भी समझ बाबा ने दी है। समय है सौभाग्यशाली से पदमापदम भाग्यशाली बनने का। कदम-कदम में कमाई है इसलिए पदमापदम भाग्यशाली हैं। हम शिव शक्ति पाण्डव सेना हैं। साकार में बाबा ने हम बहनों को, कन्याओं माताओं को आगे रखा। अभी बहनों को आगे रखकर भाई सेवा में आगे हो गये हैं। ड्रामा की हर सीन देख बाबा सदा हम बच्चों के सामने हाज़िर है। हम बच्चे बाबा के सामने हाज़िर हैं।

हम भक्ति में मानती थी जो करती हूँ वह भगवान देख रहा है। कर्म पर बड़ा ध्यान था। अभी के संस्कार सारा कल्प चलते हैं, भगवान मुझे देख रहा है। ऐसा कोई कर्म कर नहीं सकते हैं। इतना सावधान, खबरदार, होशियार रहना.. यह है महारथियों का काम। अभी जो महारथियों की सभा है, यह सारे साल में एक ही बार लगती है। बाबा ऐसी सभा को देखता है कितने शान्तिप्रिय, सुख शान्ति से सम्पन्न है। सुख शान्ति की सम्पत्ति इतनी है जो मालामाल करती है। अप्राप्त नहीं कोई वस्तु ब्राह्मणों के खजाने में, कितना नशा चढ़ता है। मेरे को क्या चाहिए? 'चाहिए' शब्द मुख पर

आता ही नहीं है। कइयों की भाषा में चाहिए बहुत आता है, यह होना चाहिए, मेरे लिए यह होना चाहिए। सूक्ष्म



दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

आशा तृष्णा रही हुई है। कहते हैं आप भये बूढ़ा तृष्णा भई जवान। सूक्ष्म माया तृष्णा के आशा के रूप में जवान बना देती है। देह अभिमान का घेराव हो जाता है। तो देह-अभिमान की स्थिति में अंदर गुप्त रहना, अतीन्द्रिय सुख में रहकर सुख शान्ति सम्पन्न बनना माना बाबा का नाम बाला करना। किसने ऐसा बनाया, अंदर से क्या निकलेगा? मेरा बाबा। समय अनुसार हम त्रिनेत्री, त्रिकालदर्शी, तीनों लोकों के मालिक बन गये हैं। प्रैक्टिकल है ना। जैसे त्रिनेत्री बनने से सूक्ष्म लाइट आ गई, त्रिकालदर्शी बनने से माइट आ गई। फिर निमित्त मात्र यहां रहते, हैं वहां, स्थिति बनाते हैं अव्यक्त। स्थिति हमारी अव्यक्त, सम्पूर्ण रहे, हर श्वास, संकल्प में अटेन्शन हो। हमारी एम ऑब्जेक्ट है लक्ष्मी-नारायण बनना। वह तो ऑटोमेटिक राजाई मिलेगी, परंतु त्रिनेत्री, त्रिकालदर्शी, तीनों लोकों के मालिक अभी हम हैं। नॉलेज ने हमको इतनी पावर दी है। फिर माता-पिता, बंधु-सखा, संबंध से, पढ़ाई से पावर दी है, पालना दी है। बनाने वाला वह है, हमको बनना है। जो बाबा की भावना है वह हमको पूरी करनी है।



दादी हृदयमोहिनी अति. मुख्य प्रशासिका

जैसा समय वैसा स्वरूप धारण करो

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के पावन अवसर पर राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी के आशीर्वचन

अपना सतयुगी स्वरूप अनुभव किया? यहीं बैठे रहे या अनुभव किया? क्योंकि जैसा समय वैसा स्वरूप चेंज करना आना चाहिए। ऐसे नहीं गीत बज रहा है डांस का और मैं छुप रही हूँ, नहीं, ये नहीं हो, जैसा समय वैसा मिलाना चाहिए क्योंकि सभा में रौनक तभी आती है जब सब एकमत हों, तो जब डांस हो तो डांस करो, शान्ति हो शान्त रहो। सब रूप बदलने की आदत चाहिए। कैसे होगा अभी डांस हो रही है, नहीं, हमारे हाथ में है हम अपनी बुद्धि को अपने हाथ में रखते हैं। ऐसे नहीं जो डांस चाहे तो हमको खींचे लेकिन जो हम चाहें वो कर सकते हैं। संगमयुग की यही विशेषता है, अभी-अभी डांस, अभी-अभी योग दोनों हमारे हाथ में हो। ऐसे नहीं कि डांस हो रहा है, तो बस डांस के पीछे ही रहें, कंट्रोलिंग पावर हो। सबके हाथ में है कंट्रोलिंग पावर? हमारे में कंट्रोल होना चाहिए, जो चाहे वो रूप धारण कर सके। ऐसी पावर है, देखो अपने में चेक करो। ऐसे नहीं बैठे यहाँ हो लेकिन बुद्धि नाच रही हो, सेकेण्ड में ब्रेक तो ब्रेक। कंट्रोलिंग पावर

हमारे हाथ में हो, डांस के हाथ में नहीं हो। कैसा भी वायुमण्डल हो एक सेकेण्ड में शान्ति तो शान्ति वो भी सहज हो। संकल्प में भी नहीं सोचो, करने के टाइम करो, खूब करो लेकिन कंट्रोल तो कंट्रोल, इसको कहा जाता है योग की सिद्धि। सिद्धि स्वरूप हो ना! कंट्रोलिंग पावर ज़रूर होनी चाहिए। जहां बाबा ले जाए वहां जाओ, रास करो तो खूब करो। हम मालिक हैं ना, ये भी अभ्यास चाहिए, ऐसा नहीं कि कंट्रोल हो और हमारी बुद्धि डांस में ही लगी रहे, क्योंकि समय अनुसार ऐसी परिस्थितियां आनी हैं, जिसमें ये प्रैक्टिकल करना पड़ेगा। उस समय कहेंगे कि आदत नहीं है, ये नहीं होगा। मैं मालिक हूँ, जो पावर चाहिए मैं यूज कर सकती हूँ। ऐसा अभ्यास है कि फिर भी दिल हो रही है उठें। जब चाहें कर्मन्द्रियां हमारे ऑर्डर में हों लूज़ नहीं हों। मैं मालिक हूँ...हैं ऐसे? ऐसे यूजिंग पावर चाहिए। समझो अभी चुप किया तो बुद्धि वहां नहीं जानी चाहिए। जैसे संगठन का स्वरूप हो वैसे प्रैक्टिकल हो। ऐसा समय आयेगा जब हमें प्रैक्टिकल करना पड़ेगा तो अभ्यास कब करेंगे, अभ्यास तो अभी करना है ना। मैं मालिक हूँ, कर्मन्द्रियों को जैसा ऑर्डर करूँ वही हो। मैं समझूँ अभी चुप हो और बोलती रहूँ, तो मैंने तो नहीं हुआ ना! सबमें शिक्षा भी है और स्विक भी

दोनों पावर चाहिए। अच्छा लगता है ना! कंट्रोलिंग पावर, समय अनुसार सेकेण्ड में कंट्रोल चाहिए। बाबा ने पाठ पढ़ाया कि कंट्रोलिंग पावर अपने हाथ में होनी चाहिए। क्या करें ये बंद क्यों हुआ नहीं जैसे ऑर्डर तो ऑर्डर। कंट्रोलिंग पावर है? पावर ऐसी हो जो समय पर काम में आये। (दादीजी ने जन्माष्टमी की मुबारक दी) मुबारक तो क्या दिल से बाबा ने सभी के मष्क पर हाथ रखकर मुबारक दी। संगठन है ना! तो सभी प्रैक्टिस होनी चाहिए। समझो बहुत मनोरंजन चल रहा है, मनोरंजन छोड़ने का मन नहीं कर रहा है लेकिन हमारे पास कंट्रोलिंग पावर हो, एक सेकेण्ड में सब भूल जाएं, शांति तो शांति। वैसे भी सारे दिन में कंट्रोलिंग पावर तो ज़रूरी है, मानो क्रोध आ रहा है, तो कंट्रोल होगा तो झगड़ा नहीं होगा। मनाना माना बनना सिर्फ माया नहीं लेकिन स्वयं को बनाना भी है तो कितना अच्छा लगेगा। जब कभी भी कोई परिस्थिति आए तो पास का सर्टीफिकेट मिलना चाहिए। जो भी करें दिल से करें, जब पढ़ाई का समय हो तो पढ़ाई पर अटेन्शन चाहिए। आदत डालो कुछ भी हो लेकिन मन पर कंट्रोल हो। आपकी टॉपिक्स में मन को कंट्रोल करने का टॉपिक भी है ना तो वो प्रैक्टिकल होना चाहिए। कैसा भी माहौल हो ऑर्डर तो ऑर्डर, हो सकता है?